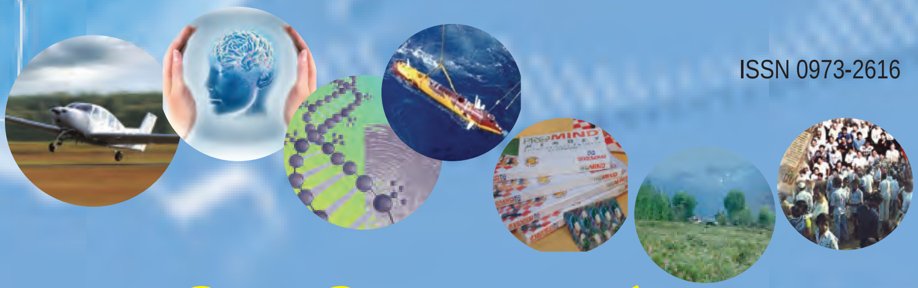

ISSN 0973-2616

प्रगति, विकास और आशा

सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह बुलेटिन

वर्ष 6 अंक 12 www.csir.res.in दिसम्बर 2018

डॉ. जितेन्द्र सिंह ने सीएसआईआर-एनईआईएसटी में प्रौद्योगिकी सुविधा केन्द्र का शुभारम्भ किया

पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय के वैज्ञानिक अनुसंधान तथा रोजगार के नए अवसरों को प्रोत्साहित करने की पहल के अन्तर्गत जोरहाट, असम में उत्तर-पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (नीस्ट) के परिसर में एक प्रौद्योगिकी सुविधा केन्द्र (टीएफसी) की स्थापना की गयी है। डॉ. जितेन्द्र सिंह, केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार), पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास (DoNER), MoS पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन, परमाणु ऊर्जा एवं अन्तरिक्ष ने 30 अक्टूबर 2018 को नूतन विज्ञान केन्द्र की आधारशिला रखी।

पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग (एस एंड टी) तथा वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) को अनुसंधान के साथ ही रोजगार के नए अवसर हेतु तकनीकी अनुप्रयोगों को संस्थापित करने में सहयोग करेगा, डॉ. जितेन्द्र सिंह ने कहा। पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय असम में नवीन विज्ञान केन्द्र की स्थापना की लागत का वहन करेगा तथा उन्होंने आरम्भ में ही इसके निर्माण हेतु 40 करोड़ रुपए आबंटित कर दिए हैं।

इस अवसर पर उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्ति थे - श्री कामाख्या प्रसाद टासा, लोकसभा सदस्य, जोरहाट; डॉ. समीर चट्टोपाध्याय, निदेशक, सीएसआईआर-एनईआईएसटी; डॉ. जी.एन. काजी, अध्यक्ष, अनुसंधान परिषद; श्री राम मुइव्वा, सचिव, एनईसी (पूर्वोत्तर परिषद) तथा डॉ. परदेशी लाल, उपकुलपति, राष्ट्रीय विश्वविद्यालय।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. जितेन्द्र सिंह, DoNER ने कहा कि उत्तर-पूर्व में ऐसा बहुत-सा वैज्ञानिक संग्रह है जो अन्वेषण की प्रतीक्षा में है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि नवीन टीएफसी आकांक्षी युवाओं के लिए वरदान सिद्ध होगी तथा उत्तर-पूर्व के आठ राज्यों के साथ-साथ सम्पूर्ण भारत के लिए उत्कृष्टता के केन्द्र के रूप में उभरेगी।

डॉ. सिंह ने नॉर्थ इस्टर्न रीजन कम्युनिटी रिसोर्स मैनेजमेंट प्रोजेक्ट (NERCORNP) तथा नॉर्थ ईस्ट रूरल लाइवलीहुड प्रोजेक्ट (NERLP) कार्यक्रम जो DoNER मंत्रालय तथा एनईसी द्वारा चलाए जा रहे हैं, का सन्दर्भ लिया तथा बताया कि ये कार्यक्रम बेरोजगार युवाओं, कृषकों, महिलाओं तथा कलाकारों के लिए रोजगार के अवसर सुलभ कराने के लिए समर्पित हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि नवीन केन्द्र तीव्र विकास के लिए तकनीकी तथा मध्यवर्ती उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेगा जिससे उत्तरपूर्वी राज्य भारत के पश्चिमी राज्यों की भांति सफलता दर प्राप्त करने योग्य बन सकेंगे।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला ने एचपीसीएल के साथ समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

भारत के पेट्रोलियम क्षेत्र में प्रयुक्त भारतीय निर्देशक द्रव्य (बीएनडीटीएन) के विकास के अन्तर्गत राष्ट्रीय प्रयास के एक भाग के रूप में सीएसआईआर-एनपीएल (राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला), नई दिल्ली तथा हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) ने BND™ के ट्रेड नाम के साथ पेट्रोलियम प्रमाणित सन्दर्भ सामग्री (सीआरएम) के स्वदेशी विकास के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

सीआरएम पेट्रोलियम उत्पादों के लिए तथा गुणवत्ता आश्वस्त करने के लिए प्रयोगशाला जांच उपकरण के अंशाकन में भी उच्च गुणवत्ता की परिस्थितिकी को प्रबन्धित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

यह सभी हितधारकों तथा जनसामान्य के लिए उपयोगी सिद्ध होगा तथा सीआरएम के लिए आयात प्रतिस्थापन के द्वारा महत्वपूर्ण विदेशी मुद्रा की बचत भी करेगा।

सीएसआईआर-एनपीएल ने उच्च शुद्धता के स्वर्ण, कोयले, जल तथा भवन सामग्री के लिए भी बीएनडी का विकास किया है।

सीएसआईआर-निस्केयर ने मानव उत्कृष्टता एवं आध्यात्मिकता पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया

मंच पर आसीन - डॉ. मनोज कुमार पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर, डॉ. चिन्मय पांड्या, प्रो वाइस चांसलर, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, प्रो. राजाराम यादव, उपकुलपति, वीबीएस पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश तथा श्री प्रवीण रामदास, आयोजन सचिव, विज्ञान भारती, नई दिल्ली

सीएसआईआर-निस्केयर ने मानव उत्कृष्टता : विज्ञान एवं आध्यात्मिकता पर राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी एनएएससी कॉम्प्लैक्स, देवप्रकाश शास्त्री मार्ग, पूसा, नई दिल्ली में एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

इस अवसर पर डॉ. चिन्मय पांड्या, प्रो वाइस चांसलर, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड मुख्य वक्ता थे। प्रो. राजाराम यादव, उपकुलपति, वीबीएस पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर तथा श्री प्रवीण रामदास, आयोजन सचिव, विज्ञान भारती, नई दिल्ली सम्मानीय अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

डॉ. पांड्या ने अपने मुख्य सम्बोधन में विज्ञान एवं आध्यात्मिकता के सम्पर्क को रेखांकित किया तथा मानव उत्कृष्टता के उद्देश्य के बारे में एवं किस प्रकार विज्ञान एवं आध्यात्मिकता एक-दूसरे के पूरक हैं, पर प्रकाश डाला। आगे उन्होंने बताया कि उद्देश्य, स्वभाव, समर्पण तथा प्रतिबद्धता मानव उत्कृष्टता के मार्ग को प्रशस्त करते हैं। उनके मतानुसार विज्ञान एवं आध्यात्मिकता व्यक्ति विशेष के जीवन उद्देश्य यथार्थ तथा समझ की अभिव्यक्ति की प्रक्रिया को प्रदीप्त करती है।

डॉ. मनोज कुमार पटैरिया, डॉ. चिन्मय पांड्या, का स्वागत करते हुए

प्रो. यादव ने जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा आध्यत्मिक विकास परस्पर जुड़े हुए हैं तथा एक-दूसरे के साथ के बिना अधूरे हैं। इससे पूर्व संगोष्ठी के प्रारम्भ में डॉ. मनोज कुमार

डॉ. चिन्मय पांड्या, प्रो-वाइस चांसलर, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार जन जनसमूह को सम्बोधित करते हुए

डॉ. मनोज कुमार पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर स्वागत सम्बोधन करते हुए

प्रो. राजाराम यादव, उपकुलपति, वीबीएस पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए

विज्ञान संचार प्रदर्शनी की एक झलक

श्रीमती वीना जैन, प्रशासन नियंत्रक धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए

पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर ने दर्शकों का स्वागत करते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि यदि आपकी सोच में पवित्रता है तो आप अन्य लोगों से बेहतर चीजों को समझ पाते हैं जैसे न्यूटन ने गिरते हुए सेब के आधार पर गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत को प्रतिपादित किया। व्याख्यानों के सम्पन्न होने के पश्चात दर्शकों ने बड़े उत्साह के साथ विशेषज्ञों से वार्तालाप किया।

इस अवसर पर विज्ञान संचार से संबंधित एक प्रदर्शनी भी लगाई गई थी जिसमें विभिन्न प्रकाशनों, पोस्टरों, संस्थान की गतिविधियों तथा दवाओं के नमूनों, औषधीय पौधें तथा हरबेरियम इत्यादि को प्रदर्शित किया गया था।

अन्त में, श्रीमती वीना जैन, प्रशासन नियंत्रक, सीएसआईआर-निस्केयर के धन्यवाद-ज्ञापन के पश्चात संगोष्ठी का समापन हुआ। लगभग 150 से अधिक वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, मीडिया कार्मिकों तथा पत्रकारों इत्यादि ने इस संगोष्ठी में भाग लिया।

सीएसआईआर-निस्केयर ने विज्ञान संचार प्रशिक्षण का आयोजन किया

सीएसआईआर-निस्केयर (राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान), नई दिल्ली ने 9-13 जुलाई 2018 के दौरान एक अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। पाठ्यक्रम का लक्ष्य प्रतिभागियों को प्रभावी विज्ञान संचार के मौलिक तत्वों से परिचित कराना तथा इससे सम्बन्धित विविध क्षेत्रों के विषय में जानकारी देना था।

प्रतिभागियों का समूह चित्र

पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को ध्यानपूर्वक व्यवस्थापित किया गया था जिसमें सैद्धान्तिक पाठ, अभ्यास सत्रों के साथ परस्पर संवाद सत्र तथा परिसर दौरे को सम्मिलित किया गया ताकि इसे प्रशिक्षणार्थियों के लिए आकर्षक तथा जीवन्त बनाया जा सके। प्रसिद्ध वैज्ञानिकों तथा विषय विशेषज्ञों ने इस पाठ्यक्रम के दौरान व्याख्यान दिए।

कार्यक्रम का औपचारिक शुभारम्भ डॉ. नकुल पराशर, विज्ञान संचारक तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष, इलेक्ट्रॉनिक कन्टेंट मैनेजमैंट इन एक्सेला टैक्नोलॉजिज द्वारा किया गया। अपने कीनोट सम्बोधन में उन्होंने विज्ञान संचार के विभिन्न आयामों तथा चुनौतियों की चर्चा की।

डॉ. मनोज कुमार पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा उन्हें पाठ्यक्रम से भरपूर लाभ उठाने के लिए कहा। इसके पश्चात सभी प्रतिभागियों ने अपना परिचय प्रदान किया। प्रशिक्षण का आरम्भ करते हुए श्री हसन जावेद खां, सम्पादक, साइंस रिपोर्टर ने विज्ञान संचार के महत्व का उद्देश्य जनसामान्य को वैज्ञानिक मद्दों के विषय में सूचित करने, सुलभ करने तथा किसी घट

डॉ. मनोज कुमार पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए, साथ में हैं (बाएं, श्री नकुल पराशर तथा श्री मुकेश पुंड (दांए))

डॉ. नकुल पराशर सम्बोधित करते हुए

श्रीमती चारू वर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्केयर प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए

ना के प्रभाव अथवा कारणों का पूर्वानुमान लगाने तथा मूल्यांकित करने व जनमानस के मध्य वैज्ञानिक चेतना जागृत करना है। उन्होंने निर्दिष्ट किया कि लेखन विज्ञान संचार की सर्वाधिक प्रभावशाली विधि है, मात्र इसलिए नहीं कि लिखित सामग्री का कहे गए शब्दों से अधिक जीवन होता है बल्कि ये विश्वसनीय भी प्रतीत होते हैं। लेखन का शौक प्रेरणा का स्रोत है जिसे लोगों के साथ प्रभावी संचार के लिए एक औजार के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता हैं, उन्होंने कहा। श्री खान ने संचार में सम्मुख आने वाली चुनौतियों यथा सनसनी फैलाने तथा महत्वहीन बनाने जैसे कार्य, अनुचित रिपोर्टिंग अविश्वसनीय रिपोर्टिंग के विषय में भी चर्चा की।

अगले सत्र में श्री हसन जावेद खां ने प्रभावी विज्ञान संचार के विषय में बात की जिसमें उन्होंने प्रभावशाली लोकप्रिय विज्ञान लेखों के लेखन में बारीकियों तथा जटिलताओं के विषय में गहराई से बताया। बाद में प्रतिभागियों को अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित वास्तविक अनुसंधान लेखों पर आधारित लेखन अभ्यास कार्य करने को दिए गए।

दूसरे दिन कार्यसूची में विभिन्न विषयों तथा विशेषज्ञों का बोलबाला रहा। सुश्री गीता महादेवन, सम्पादक, इंडियन जर्नल ऑफ कैमिस्ट्री-सेक्शन-ए (आईजेसी-ए) ने रिसर्च कम्युनिकेशन पर वार्ता की। उन्होंने आईएमआरएडी (परिचय, विधि, अनुसंधान तथा चर्चा) की संकल्पना जो किसी भी वैज्ञानिक अनुसंधान पत्रिका के लिए सामान्यतः प्रयुक्त किया जाने वाला प्रारूप है, के विषय में विस्तार से जानकारी दी।

अगले सत्र में श्रीमती कनिका मलिक, सम्पादक, जर्नल ऑफ इन्टेलेक्च्युल प्रोपर्टी राइट्स (जेआईपीआर) ने विज्ञान संचार तथा विशेष रूप से अनुसंधान पत्रिकाओं की जानकारी दी। उन्होंने कॉपीराइट के उद्भव आवश्यकता तथा महव के विषय

प्रशिक्षणार्थी डॉ. मनोज कुमार पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर तथा संस्थान के अन्य अधिकारियों के साथ

में तथा हमारे संविधान में कानून के रूप में इसकी मान्यता के विषय में बताया यद्यपि बहुत से लोगों को कॉपीराइट तथा पेटेंटों के सम्बन्ध में नियम तथा नियामकों की जानकारी नहीं है, अतः व्याख्यान इस जटिल क्षेत्र में सूचनात्मक जानकारी प्रदान करने में सफल रहा।

डॉ. जी. महेश, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक तथा सम्पादक, एनल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन स्टडीज के व्याख्यान *स्कॉलरली कम्युनिकेशन एंड न्यू मैजर्स* से तीसरे दिन का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। उन्होंने अनुसंधान पत्रिकाओं के ऐतिहासिक उद्‍भव का गहरा ज्ञान देने के साथ-साथ डिजीटल युग में इसके रूपान्तर पर भी चर्चा की। उन्होंने आज के युग में विद्यमान विज्ञान अनुसंधान पत्रिकाओं तथा उनके मध्य मौलिक अन्तर के विषय में बातचीत की।

डॉ. जी. महेश ने अनुसंधान पत्रिकाओं की रेटिंग के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले पैरामीटरों पर भी चर्चा की। उदाहरण के लिए इम्पैक्ट फैक्टर जिसकी दो वर्षों की अवधि के उद्धरणों के आधार पर गणना की जाती है, को सही पैरामीटर नहीं माना जा सकता क्योंकि इसमें बाद में किए गए उद्धरणों की गिनती नहीं की जाती। उन्होंने बहुत से उत्कृष्ट लेखों का उदाहरण दिया जिन्हें पहले या दूसरे वर्ष में बहुत कम उद्धरण प्राप्त हुए परन्तु कुछ वर्षों के पश्चात सैकड़ों की संख्या में उद्धरण प्राप्त हो गए। ऐसे तार्किक विषय कुछ पैरोमीटरों की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह्‌न लगाते हैं तथा उन्हें सन्देहास्पद बनाते हैं।

चौथा दिन प्रतिभागियों के लिए सर्वाधिक उत्साह का दिन था क्योंकि कैमरे के सम्मुख आने में कुछ प्रतिभागियों को घबराहट हुई, वहीं कुछ ने कैमरे के सामने पहली बार आने पर भी भरपूर आत्मविश्वास दिखाया। प्रतिभागियों ने इस अनुभव का आनन्द लिया तथा अति आधुनिक तकनीकियों से सुसज्जित इस गृहित स्टूडियो की भरपूर जानकारी प्राप्त की।

दिन के दूसरे भाग में नवीनतम सुविधाओं से सुसज्जित प्रिंटिंग प्रेस का दौरा कराया गया जहां प्रतिभागियों को मुद्रण के लिए प्रयुक्त की जा रही बड़ी, विदेशी मशीनों की कार्यप्रणाली से अवगत कराया।

अन्तिम दिन श्रीमती चारू वर्मा, प्रधान वैज्ञानिक तथा टीम लीडर, सीएसआईआर नोगेट प्रोजेक्ट ने आईटी इन साइंस कम्युनिकेशन की भूमिका पर प्रकाश डाला। सूचना प्रणालियों तथा सूचना प्रौद्योगिकियों के मौलिक तत्वों की जानकारी देते हुए उन्होंने विज्ञान संचार की चुनौतियों का सामना करने में आईटी की आवश्यकता के साथ-साथ उसके लाभों पर भी प्रकाश डाला। वेब के उद्‍भव के विषय में बोलते हुए उन्होंने सूचित किया कि अब ध्यान वेब ऑफ कन्टेंट्स से वेब ऑफ कम्युनिकेशन की ओर तथा उसके बाद वेब आफ थिंग्स तथा अभी हाल ही में वेब ऑफ थॉट्स पर केन्द्रित हो रहा है। कुछ महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट यथा ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट तथा लार्ज हेड्रन कॉलाइडर का उदाहरण देते हुए श्रीमती वर्मा ने आधुनिक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में आईटी की सशक्त भूमिका को दोहराया।

लंच के पश्चात इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन एक प्रतिपुष्टि सत्र तथा समापन समारोह के आयोजन से हुआ। प्रतिभागियों ने कहा कि यह पाठ्यक्रम बहुत ही सूचनात्मक तथा विज्ञान लेखन के क्षेत्र में जाने वाले बहुत से प्रतिभागियों के लिए बेहद प्रेरणात्मक भी था। इसके साथ ही कार्यक्रम का समापन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

सीएसआईआर-सीरी में हिंदी सप्ताह 2018 का आयोजन

सीएसआईआर-केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, पिलानी में 5-11 सितंबर, 2018 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी जनवरी से अगस्त 2018 तक 07 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इनके अतिरिक्त हिंदी सप्ताह के दौरान प्रश्न मंच सहित 07 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस प्रकार संस्थान में वर्ष पर्यन्त कुल 14 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी सप्ताह का समापन 14 सितंबर, 2018 को हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह के साथ किया गया। कार्यक्रम के दौरान राजभाषा संदर्शिका 2017-18 का विमोचन तथा संस्थान में वर्ष पर्यन्त लागू राजभाषा प्रोत्साहन योजनाओं तथा वर्ष पर्यन्त आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के कार्यकारी निदेशक प्रोफेसर राज सिंह, मुख्य वैज्ञानिक ने की। समारोह में विजेताओं के अलावा राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा हिंदी सप्ताह आयोजन समिति के सदस्यों सहित अन्य सहकर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी ने किया। इस वर्ष भी विभिन्न प्रतियोगिताओं में नियमित सहकर्मियों के साथ-साथ संस्थान में कार्यरत/अध्ययनरत एसीएसआईआर छात्र/छात्राएँ, परियोजना अध्येता, अनुसंधान अध्येता, प्रशिक्षणार्थी आदि भी सम्मिलित हुए। सभी प्रतियोगिताओं में

पुरस्कार वितरण समारोह में संबोधित करते हुए प्रोफेसर राज सिंह, मुख्य वैज्ञानिक एवं कार्यकारी निदेशक सीएसआईआर-सीरी

प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

संस्थान में हिंदी सप्ताह का शुभारंभ 5 सितम्बर 2018 को मुख्य सभागार में आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता के साथ हुआ। इस अवसर पर आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ प्रमोद कुमार खन्ना, मुख्य वैज्ञानिक ने कहा कि राजभाषा प्रकोष्ठ के प्रयासों व सभी सहकर्मियों के सहयोग से संस्थान में राजभाषा का प्रसार निरंतर बढ़ रहा है और हमारे प्रशासनिक अनुभागों के अलावा तकनीकी अनुभागों में भी सहकर्मी अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का उपयोग कर रहे हैं। उन्होंने सभी सहकर्मियों का आह्वान करते हुए कहा कि हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में सम्मिलित होकर आयोजन को सफल बनाएँ।

सप्ताह के दौरान संस्थान में आशुभाषण, वाद-विवाद, कविता पाठ (स्वरचित), कविता पाठ (अन्य कवि), प्रशासनिक प्रस्तुतीकरण, तकनीकी प्रस्तुतीकरण तथा प्रश्न मंच का आयोजन किया गया। विगत वर्षों की भाँति सभी प्रतियोगिताएँ दो वर्गों (नियमित सहकर्मी तथा अस्थायी सहकर्मी) में आयोजित की गईं।

हिंदी सप्ताह का समापन एवं हिंदी दिवस समारोह 14 सितम्बर 2018 को आयोजित किया गया। हिंदी दिवस समारोह में प्रो. राजसिंह, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा हिंदी सप्ताह के दौरान तथा उससे पूर्व वर्ष पर्यन्त आयोजित की गई प्रतियोगिताओं तथा उनके 93 विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता प्रो. राज सिंह, मुख्य वैज्ञानिक ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने सभी सहकर्मियों को हिंदी दिवस की शुभकामना दी। इस अवसर पर उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को भी बधाई दी।

हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए कार्यकारी निदेशक प्रोफेसर राज सिंह, मुख्य वैज्ञानिक ने हिंदी की विशेषताओं की चर्चा करते हुए कहा कि विश्व की अन्य विकसित एवं प्रगतिशील भाषाओं की तरह हिंदी ने भी अन्य भारतीय भाषाओं सहित अंग्रेजी के शब्दों को भी अपनाया है। उन्होंने इस संदर्भ में भारत सरकार के प्रयासों को भी रेखांकित किया। हिंदी की समावेशी प्रकृति की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि अनेक भाषाओं के शब्दों को हिंदी ने अपने में समाहित किया हैं। उन्होंने कहा कि आज हिंदी में अनेक क्षेत्रीय और विदेशी भाषाओं के अनेक शब्द इस प्रकार घुल-मिल गए हैं जिन्हें अलग करना अत्यंत कठिन है। इस अवसर पर उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भी हिंदी के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि राजभाषा के रूप में हिंदी भाषा का चयन करने में हमारे नीति-नियंताओं ने बहुत विचार-विमर्श एवं मंथन किया और फिर आखिर में सभी ने एकमत से हिंदी को राजभाषा के रूप में चुना।

उन्होंने कामना की कि सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों में हिंदी कामकाज व सभी के उपयोग की भाषा बने। उन्होंने कहा कि सभी के समन्वित प्रयासों से और हम इस ओर बढ़ भी रहे हैं। उन्होंने सभी सहकर्मियों से अपने दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग करने का आह्वान करते हुए कहा कि हमें वैज्ञानिक कार्यों में हिंदी और अंग्रेजी में आवश्यकतानुसार संतुलन बनाकर चलना होगा। अंत में उन्होंने पुनः सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी।

राजभाषा संदर्शिका का विमोचन

इस अवसर पर प्रोफसर राज सिंह, मुख्य वैज्ञानिक एवं कार्यकारी निदेशक एवं मुख्य वैज्ञानिक तथा डॉ. पी.के. खन्ना, मुख्य वैज्ञानिक ने राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा प्रकाशित राजभाषा संदर्शिका (वर्ष 2017-18) का विमोचन भी किया।

श्री के.पी. शर्मा, प्रशासन नियंत्रक ने सभी उपस्थित सहकर्मियों के समक्ष भारत सरकार के माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह द्वारा दिया गया हिंदी दिवस संदेश पढ़ा। उन्होंने भी सभी सहकर्मियों को हिंदी दिवस की शुभकामना दी। वितगत वर्षों की भाँति पुरस्कार वितरण से पूर्व कविता पाठ (स्वरचित) के विजेताओं द्वारा अपनी पुरस्कृत रचनाओं का वाचन भी किया गया।

पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह में संस्थान में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अगस्त, 2017 से जुलाई, 2018 तक लागू पाँच प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत अपना दैनिक कामकाज हिंदी में करने के लिए निम्नलिखित 61 सहकर्मियों को पुरस्कृत किया गया।

राजभाषा संदर्शिका 2017-18 का विमोचन करते हुए प्रोफेसर राज सिंह, मुख्य वैज्ञानिक एवं कार्यकारी निदेशक एवं आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ पी के खन्ना, मुख्य वैज्ञानिक

राजभाषा प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए

राजभाषा चल वैजयंती पुरस्कार

संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए लागू की गई राजभाषा चल वैजयंती योजना के विजेता अनुभागों/प्रभागों को भी चल वैजयंती एवं प्रमाण पत्र भेंट किए गए जिसका विवरण निम्नवत है

1. **प्रशासनिक वर्ग-** प्रशासनिक वर्ग में हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए वित्त एवं लेखा अनुभाग को प्रमाण पत्र सहित राजभाषा चल वैजयंती भेंट की गई।
2. **तकनीकी वर्ग-** वैज्ञानिक एवं तकनीकी वर्ग में हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए इंजीनियरी सेवाएँ प्रभाग को प्रमाण पत्र सहित राजभाषा चल वैजयंती भेंट की गई।

समारोह के दौरान कविता पाठ (स्वरचित) खंड के विजेताओं द्वारा अपनी पुरस्कृत रचनाओं का वाचन किया गया। उपस्थित सहकर्मियों ने तालियाँ बजाकर कवियों का उत्साहवर्धन किया। अपने संबोधन के अंत में प्रोफेसर राज सिंह, मुख्य वैज्ञानिक ने सभी विजेताओं को बधाई दी तथा कविता पाठ के विजेताओं और उनकी रचनाओं की भी सराहना की।

14 सितंबर को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह व हिंदी दिवस समारोह का संचालन हिंदी अधिकारी श्री रमेश बौरा ने किया। उन्होंने निदेशक महोदय सहित इस अवसर पर उपस्थित हिंदी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ प्रमोद कुमार खन्ना, उपस्थित राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों, अधिकारियों एवं सहकर्मियों का स्वागत करते हुए संस्थान में इस आयोजन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। अपने सबोधन में उन्होंने कहा कि इस अवधि में देशभर के केंद्रीय कार्यालयों, शिक्षण संस्थानों आदि में इस प्रकार के आयोजन किए जाते हैं। उन्होंने वर्ष पर्यन्त आयोजित की गई प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। ।

अंत में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वरिष्ठ सदस्य एवं हिंदी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. पी.के. खन्ना, मुख्य वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी तथा निदेशक महोदय, आयोजन समिति के सदस्यों तथा इस आयोजन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी सहकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए हिंदी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ पी के खन्ना, मुख्य वैज्ञानिक

समारोह का संचालन करते हुए श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी

प्रश्न मंच

हिंदी सप्ताह के दौरान दिनांक 11.09.2018 को प्रश्न-मंच का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित सहकर्मियों से विज्ञान, प्रशासन, हिंदी साहित्य, व्याकरण, सीरी, सीएसआईआर आदि से संबंधित सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे गए। प्रत्येक प्रश्न का सही उत्तर देने पर सहकर्मियों को पुरस्कार स्वरूप हिंदी सप्ताह के स्मृति चिह्न के रूप में बेहतर गुणवत्ता के पेन भेंट किए गए। प्रश्न मंच का संचालन श्री पंकज गोस्वामी, अनुभाग अधिकारी (सामान्य) ने किया।

इस प्रकार सीएसआईआर-सीरी में हिंदी सप्ताह का आयोजन संपन्न हुआ।

सीएसआईआर-सीएलआरआई में आयोजित हिन्दी वर्तनी एवं शब्दावली तथा टिप्पण आलेखन कार्यशाला

सीएसआईआर-केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान में 30 अगस्त से 14 सितम्बर 2018 तक हिन्दी पक्ष समारोह का आयोजन किया गया। इस क्रम में 06-09-2018 को संस्थान में हिन्दी वर्तनी एवं शब्दावली विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 12 राजपत्रित, 13 अराजपत्रित अधिकारी/कर्मचारी और 03 अनुसंधान अध्येताओं ने भाग लिया। श्री महेंद्र कुमार, पी. जी.टी., के.वी. सीएलआरआई ने इस कार्यशाला का संचालन किया। उन्होंने कर्मचारियों को हिन्दी भाषा की वैज्ञानिकता, शब्दों का उच्चारण, प्रशासनिक विभागों के प्रकार्यों के लिए प्रयुक्त शब्दावली इत्यादि के बारे में बताया।

उन्होंने बताया कि हिन्दी बहुत ही वैज्ञानिक भाषा है, जिसे उच्चारण के अनुसार ही लिखा जाता है अर्थात जो बात कही जाती है, वहीं लिखी जाती है। क्षेत्रीय प्रभाव के कारण कभी-कभी शब्दों का गलत उच्चारण हो जाता है। इस तरह शब्दों का गलत उच्चारण हो जाता है। इस तरह शब्दों के गलत उच्चारण से कभी-कभी अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इसके अलावा, देश के विभिन्न प्रदेशों में समान संकल्पना व्यक्त करने के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग करने से प्रशासनिक कामकाज में पारदर्शिता सुनिश्चित करने में बाधा उत्पन्न होती है। इसे दूर करने के लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा मानक शब्दावली का निर्माण किया गया है। इसके अनुसार सभी संकल्पनाओं के लिए मानक शब्द निर्धारित किए गए हैं, जिनका प्रयोग करना अनिवार्य है। इस दौरान उन्होंने तत्सम, तद्‌भव, देशज और विदेशी शब्दों पर प्रकाश डालते हुए सरल वाक्य बनाने के बारे में विस्तार से समझाया।

उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अपील की कि वे सभी अपने-अपने विभागों में उपरोक्त शब्दावली का प्रयोग करते हुए राजभाषा में कार्य करने का प्रयास करें। जहां किसी संकल्पना का हिन्दी समतुल्य शब्द पता नहीं होगा, वहां अंग्रेजी शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। अंत में उन्होंने प्रतिभागियों को कुछ महत्वपूर्ण राजभाषा अधिनियम, नियम और अन्य महत्वपूर्ण प्रावधानों के बारे में तथा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के बारे में संक्षिप्त में समझाया।

इस कार्यशाला के प्रतिभागियों ने कार्यशाला के विषय एवं उसके आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

सीएसआईआर-सीएलआरआई में आयोजित दो-दिवसीय वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी की रिपोर्ट

सीएसआईआर-केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान में 30 अगस्त से 14 सितम्बर 2018 तक हिन्दी पक्ष समारोह का आयोजन किया गया। इस क्रम में 04-05 सितम्बर 2018 को संस्थान में दो-दिवसीय वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. बी.चन्द्रसेकरन मुख्य अतिथि के रूप में, डॉ. संजीव गुप्त, मुख्य वैज्ञानिक और डॉ. शुभेन्दु चक्रबर्ती, मुख्य वैज्ञानिक सम्मानीय अतिथि के रूप में तथा डॉ. एन.पी. राजामाने, विभागाध्यक्ष, भू-पॉलीमर्स अनुसंधान विभाग एसआरएम विश्वविद्यालय विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किए गए।

इस कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए डॉ. बी. चन्द्रसेकरन, सीएसआईआर-सीएलआरआई ने कहा कि वैज्ञानिक संचार को बढ़ावा देने के लिए इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन सराहनीय है। वैज्ञानिक कार्यों को समाज में व्यापक रूप से स्थापित करने के लिए हिन्दी संप्रेषण का सहज माध्यम है। देश के अधिकांश लोगों तक वैज्ञानिक प्रौद्योगिकियों/तकनीकों को पहुंचाने के लिए हिन्दी भाषा बहुत उपयोगी है। जनता की समस्याओं का वैज्ञानिक रूप से हल करना और उन्हें लाभ पहुंचाना ही इन वैज्ञानिक खोजों का महत्वपूर्ण लक्ष्य है। इसके लिए कई सामाजिक माध्यम, डिजिटल साधनों आदि की सहायता ले सकते हैं। हमारे संस्थान की वैज्ञानिक खोजों के बारे में जनता को अवगत कराने के लिए हमारे क्षेत्रीय केन्द्रों में कई आऊटरीच कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. राजामाने ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिन्दी बहुत ही सरल एवं सहज भाषा है, जिसका उपयोग वैज्ञानिक गतिविधियों के प्रचार-प्रसार के लिए प्रभावी तरीके से किया जा सकता है। अभिव्यक्ति सरल भाषा में होनी चाहिए क्योंकि अनुसंधान के परिणाम सार्वजनिक जनता तक पहुंचाने के लिए हिन्दी एक सशक्त माध्यम है और इससे परिणामों का उपयोग दुगुना हो सकता है। इससे न केवल प्रगति होती है बल्कि यह सार्वजनिक जनता में जागरूकता पैदा करती है। डॉ. संजीव गुप्त जी ने भी निदेशक महोदय के विचारों से सहमत होते हुए भाषा के उपयोग पर विशेष बल दिया तथा उन्होंने बताया कि उद्योग के साथ चर्चा में आमतौर पर हिन्दी का ही प्रयोग होता है और चर्चाएं सफल होती हैं। डॉ. शुभेंदु चक्रबर्ती ने राजभाषा हिन्दी के महत्व को दोहराया तथा संस्थान के सभी वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों को अपने कार्यों में हिन्दी का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया।

तदुपरांत संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों एवं सहायकों तथा शोध छात्रों ने पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण के द्वारा विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर अपने प्रस्तुतीकरण दिए।

दूसरे दिन 05 सितम्बर 2018 को संस्थान के वैज्ञानिक एवं तकनीकी समूह के अधिकारी/कर्मचारियों के लिए हिन्दी में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डॉ. के.जे. श्रीराम, प्रधान वैज्ञानिक, सीएलआरआई ओर डॉ. एन.पी. राजामाने, विभागाध्यक्ष, भू-पॉलीमर्स अनुसंधान विभाग, एसआरएम विश्वविद्यालय, चेन्नै को मुख्य निर्णायकों के रूप में आमंत्रित किया गया। उक्त कार्यक्रम के दौरान संस्थान के वैज्ञानिक और तकनीकी समुदाय के 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया और विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर हिन्दी में पोस्टर के माध्यम से अपने विषय के बारे में वर्णन किया। निर्णायकों ने उनके विषय विशेष के बारे में कुछ प्रश्न पूछकर जानकारी मांगी, जिनका प्रतिभागियों ने संतोषजनक उत्तर दिए।

संगोष्ठी के अंत में निदेशक महोदय ने उक्त कार्यक्रम के आयोजन के लिए प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दीं।

सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई में हिन्दी सप्ताह समापन समारोह आयोजित

सीएसआईआर-केन्द्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसएमसीआरआई), भावनगर में 17 सितंबर को पिछले सप्ताह से चल रहे हिन्दी कार्यक्रमों के समापन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. (डॉ.) हेमंत मेहता, डीन, राजकीय मेडिकल कॉलेज, भावनगर और मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती रूपा श्रीनिवासन, मण्डल रेल प्रबन्धक, भावनगर आमंत्रित थे।

अतिथियों के स्वागत के उपरांत कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुये वैज्ञानिक एवं प्रभारी-राजभाषा कार्यान्वयन, डॉ. कान्ति भूषण पाण्डेय ने संस्थान में हिन्दी भाषा के अद्यतन कार्यान्वयन तथा हिन्दी सप्ताह के कार्यक्रमों के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया। अपने प्रासंगिक व्याख्यान में विशिष्ट अतिथि प्रो. (डॉ.) हेमंत मेहता अपनी सरल शैली में सहज एवं स्वाभाविक रूप से हिन्दी प्रयोग पर बल दिय। मुख्य अतिथि, श्रीमती रूपा श्रीनिवासन ने अपने सम्बोधन में हिन्दी के व्यापक प्रसार एवं अधिकतम प्रयोग पर ज़ोर दिया। सीएसएमसीआरआई में हो रहे हिन्दी भाषा के कार्यान्वयन की प्रशंसा करते हुए उन्होंने संस्थान को प्राप्त प्रथम राजभाषा शील्ड हेतु बधाई भी दी। समारोह में सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। वर्ष के दौरान हिन्दी कार्यान्वयन में वृद्धि हेतु विशेष प्रयासरत वैज्ञानिकों तथा अधिकारियों को भी सम्मानित किया गया।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष बीडीआईएम समूह, डॉ. कन्नन श्रीनिवासन ने सीएसएमसीआरआई में राजभाषा कार्यान्वयन की सराहना करते हुए हिन्दी विभाग को बधाई देते हुए कहा कि सभी क्षेत्रों में राजभाषा हिन्दी को सही स्थान देकर ही देश का विकास संभव होगा। निदेशक डॉ. अमिताव दास की तरफ से संदेश में उन्होंने सभी कर्मचारियों को हिन्दी का अधिकाधिक उपयोग करने का आह्वान किया। समारोह का समापन संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी श्री आलोक कुमार के धन्यवाद ज्ञापन द्वारा हुआ।

कार्यक्रम की झलकियां

सीएसआईआर-सीरी में विद्युत गतिशीलता एवं प्रौद्योगिकी विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआइ-आर-सीरी), पिलानी में विद्युत गतिशीलता एवं प्रौद्योगिकी विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान के पावर इलेक्ट्रॉनिक्स समूह द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का उद्घाटन 20 सितंबर, 2018 को परंपरागत रूप से दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। आयोजन की अध्यक्षता प्रोफेसर शांतनु चौधुरी, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने की। इस अवसर पर आईआईटी-खड़गपुर से प्रोफेसर सिद्धार्थ मुखोपाध्याय, आईआईटी-दिल्ली से प्रोफेसर सुकुमार मिश्र, बिट्स-पिलानी से डॉ. हरिओम बंसल, सीएसआईआर-सीरी चेन्नै केंद्र से डॉ. बालासुब्रह्मण्यम पेसला, तथा एस टी माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स से डॉ. अमन कुमार झा एवं एम्पियर वेहिकल प्रा.लि से श्री पी. बालाधंद्युतपानी द्वारा महत्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान दिए गए। कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य विद्युत चालित वाहनों की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं पर चर्चा करना था। इस अवसर पर आमंत्रित अतिथियों व प्रतिभागियों के अलावा संस्थान के वैज्ञानिक एवं अन्य सहकर्मी तथा स्थानीय शिक्षण संस्थाओं बिट्स-पिलानी और बीकेबीआईईटी के विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

कार्यशाला का शुभारंभ परंपरागत रूप से दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर शांतनु चौधुरी ने सभी आमंत्रित वक्ताओं एवं प्रतिभागियों का औपचारिक

दीप प्रज्वलन कर कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए अतिथि

स्वागत किया। उन्होंने वर्तमान में पावर इलेक्ट्रॉनिक्स में हो रहे प्रौद्योगिकीय बदलावों पर चर्चा करते हुए इस क्षेत्र में संस्थान की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। उन्होंने इस अवसर पर संस्थान की प्रमुख शोध गतिविधियों को भी रेखांकित किया। अंत में उन्होंने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का सुदूर क्षेत्रों

उद्घाटन सत्र में उपस्थित अतिथिगण, प्रतिभागी एवं संस्थान के सहकर्मी

स्वागत उद्‌बोधन देते हुए संस्थान के निदेशक प्रोफेसर शान्तनु चौधुरी

कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए डॉ. एस. सी. बोस, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीरी

से आकर कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए आभार व्यक्त किया और कार्यशाला की सफलता की कामना की। इससे पूर्व डॉ. एस. सी. बोस, मुख्य वैज्ञानिक ने कार्यशाला के आयोजन की पृष्ठभूमि तथा इसकी रूपरेखा पर प्रकाश डाला।

कार्यशाला के तकनीकी सत्र के दौरान आमंत्रित वक्ताओं ने निम्नलिखित विषयों पर अपने प्रस्तुतीकरण दिए-

1. ई-मोबिलिटी : सम आस्पेक्ट्स - प्रोफेसर शांतनु चौधुरी, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी
2. फ्यूचर ऑफ मोबिलिटी द्व विद फोकस ऑन ई-मोबिलिटी - श्री पी. बालाबंद्युतपानी, एम्पियर वेहिकल प्रा. लि.
3. कंट्रोल ऑफ इलेक्ट्रिक वेहिकल्स - चैलेंजेज़ एंड प्रॉस्पेक्ट्स फॉर इंडिया - प्रोफेसर सिद्धार्थ मुखोपाध्याय, आईआईटी-खड़गपुर
4. लिडार टेक्नोलॉजीज़ फॉर ऑटोनॉमस इलेक्ट्रिकवेहिकल्स - डॉ. बालासुब्रह्ममण्यम पेसला, सीएसआईआर-सीरी, चेन्नै केन्द्र
5. स्टेट ऑफ चार्ज एस्टिमेशन मेथड्स एंड पावर मैनेजमेन्ट स्ट्रैटेजीज़ इन हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वेहिकल्स - डॉ. हरिओम बंसल, बिट्स-पिलानी
6. स्मार्ट इलेक्ट्रिकल वेहिकल चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चरः प्रेज़ेन्ट एंड फ्यूचर - प्रोफेसर सुकुमार मिश्र, आईआईटी, दिल्ली
7. इलेक्ट्रिक वेहिकल चार्जिंग : चैलेन्जेज़ एंड सॉल्युशन्स- डॉ. अमन कुमार झा, एस टी माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स

पैनल चर्चा

कार्यशाला के अंतिम चरण में पैनल परिचर्चा सत्र का आयोजन किया गया। पैनल चर्चा का संचालन प्रोफेसर राज सिंह, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीरी ने किया। पैनल सदस्यों में प्रोफेसर सिद्धार्थ मुखोपाध्याय, प्रोफेसर सुकुमार मिश्र, डॉ हरिओम बंसल, डॉ. बालासुब्रह्मण्यम पेसला, डॉ अमन कुमार झा तथा श्री पी. बालाधंद्युतपानी सम्मिलित थे।

सत्र के अंत में प्रोफेसर शान्तनु चौधुरी, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने समापन उदबोधन दिया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कार्यशाला के दौरान हुई चर्चा-परिचर्चा से विद्युत वाहनों व पावर इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में शोधरत वैज्ञानिक व शोधार्थी अवश्य लाभान्वित हुए होंगे।

कार्यक्रम का संचालन श्री प्रमोद तँवर, वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीरी, दिल्ली केंद्र ने किया। संचालन के दौरान उन्होंने अतिथियों का परिचय भी दिया। अंत में श्री बृजेन्द्र वर्मा, वैज्ञानिक, पावर इलेक्ट्रॉनिकी समूह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पैनल परिचर्चा सत्र के दौरान मंचस्थ विद्वान विशेषज्ञ

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की में 29 अक्टूबर से 03 नवंबर 2018 के दौरान भ्रष्टाचार मिटाओ : नया भारत बनाओ विषय के साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. सुवीर सिंह के निर्देशन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाते हुए निदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन

संस्थान के निदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन के निर्देशन में सत्यनिष्ठा की शपथ ग्रहण कार्यक्रम के साथ 29 अक्टूबर 2018 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह का शुभारम्भ हुआ। संस्थान के वैज्ञानिक, कार्मिकों ने अपने कार्यकलापों के प्रत्येक क्षेत्र में ईमानदारी और पारदर्शिता बनाए रखने, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से भ्रष्टाचार उन्मूलन करने के लिए निर्बाध रूप से कार्य करने, अपने संगठन के विकास और प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहते हुए अपने सामूहिक प्रयासों द्वारा अपने संगठन को गौरवशाली बनाने तथा अपने देशवासियों को सिद्वान्तों पर आधारित सेवा प्रदान करने हेतु अपने कर्तव्य का पालन पूर्ण ईमानदारी से करने की सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा ग्रहण की।

संस्थान की एक टीम ने ग्राम पंचायतों में जागरूकता हेतु ग्राम सभाओं द्वारा भ्रष्टाचार के विरूद्ध ग्राम वासियों को सचेत किया। साथ ही ग्राम सभाओं के अंतर्गत विद्यालयों - राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बेलड़ी -हरिद्वार तथा राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय बेलड़ा प्रथम रुड़की - में विद्यार्थियों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता और पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

डॉ. एन. गोपालकृष्णन, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सम्बोधित करते हुए

डॉ अतुल कुमार अग्रवाल, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक सम्बोधित करते हुए

विद्यार्थियों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ अतुल कुमार अग्रवाल के संयोजन में कक्षा 11 के विद्यार्थियों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें केंद्रीय विद्यालय न. 1, चिल्ड्रेन्स सीनियर एकैडमी, ग्रीनवे मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल, दून पब्लिक स्कूल तथा आर्मी पब्लिक स्कूल न. 2 के लगभग 200 विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ प्रतिभागिता की।

वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेताओं में दून पब्लिक स्कूल की कु. वर्तिका चौहान ने प्रथम, आर्मी पब्लिक स्कूल नं. 2 के शरद सिंह ने दूसरा, ग्रीनवे मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल की कु. खुशी भाटिया ने तीसरा तथा चिल्ड्रेन्स सीनियर एकैडमी की कु. कविता लोहान ने चौथा स्थान प्राप्त किया। श्री एस. के. नेगी एवं डॉ. एल.पी. सिंह ने निर्णायकों की भूमिका निभाई।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में केंद्रीय विद्यालय न. 1 से कु. गार्गी व कु. आकांशा की टीम ने प्रथम, ग्रीनवे मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल से कु. नंदिनी मित्तल व सूरज सेतु की टीम ने दूसरा तथा आर्मी पब्लिक स्कूल न. 2 से कु. नैंसी पटेल तथा अखिलेश सिंह की टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

संस्थान के कर्मियों के लिए एक आदर्श-वाक्य लेखन प्रतियोगिता तथा संस्थान के कार्मिकों के कक्षा 5 तक के बच्चों के लिए पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

संस्थान के कर्मचारियों को भ्रष्टाचार व इससे जुड़े विषयों के प्रति संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से भ्रष्टाचार मिटाओ : नया भारत बनाओ विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए संस्थान के वरिष्ठ प्रधान

वैज्ञानिक डॉ. अतुल कुमार अग्रवाल ने बताया कि भ्रष्टाचार की बीमारी पूरे विश्व में प्रसारित है, परन्तु इसके विरुद्ध लड़ाई में भारत अन्य देशों से बहुत पीछे है।

यह हमारे लिए दुःख की बात है कि 180 देशों की सूची में भारत भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई में 80वें पायदान पर है तथा एशिया प्रशांत क्षेत्र में निष्कृष्टतम अपराधियों की श्रेणी में गिना जाता है। उन्होंने भ्रष्टाचार के प्रसार के कारणों, उसके बुरे प्रभावों तथा इसके रोकथाम के लिए बने कानूनों के विषय में विस्तारपूर्वक बताया। भ्रष्टाचार के विरुद्ध एकजुट होकर लड़ने तथा कार्य में पारदर्शिता, निष्पक्षता एवं जवाबदेही लाने पर उन्होंने ज़ोर दिया तथा सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न नियमों तथा कानूनों का भी उल्लेख किया। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं मिसाइल मैन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा दिए गए विभिन्न उद्धरणों को भी पेश किया और कहा कि यह भ्रष्टाचार मनुष्य के मन में जन्म लेता है जिसके लिए अभी तक किसी गैजेट का आविष्कार नहीं हुआ है। यह दो भ्रष्ट मनों की सांठ-गाँठ है जो कार्यालय में ही नहीं, कहीं भी संभव है। उन्होंने कहा कि आज उन मूल्यों के पुनर्स्थापना का समय आ गया है जब ईमानदारी का सम्मान एक भ्रष्ट व्यक्ति की कमाई से अधिक मूल्यवान साबित हो। ईमानदारी का यह सम्मान भ्रष्टाचार की दीमक से विनाश होते राष्ट्र का कायाकल्प कर देगा। हमें पोलियो उन्मूलन अभियान की तरह भ्रष्टाचार के विरुद्ध एकजुट होकर लड़ना होगा। भ्रष्टाचार के विरुद्ध युद्ध में सूचना का अधिकार प्रावधान को जनता का सबसे बड़ा शस्त्र बताते हुए डॉ. अग्रवाल ने इसके नियमों तथा प्रावधानों को सरल शब्दों में समझाया।

संस्थान के निदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन पुरस्कार वितरण करते हुए

समापन समारोह के दौरान सप्ताह भर में विभिन्न प्रतियोगिताओं में बनाये गए पोस्टरों, नारों तथा बैनरों को संस्थान परिसर में प्रदर्शित किया गया। समापन समारोह में राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की के निदेशक डॉ. एस. के. जैन मुख्य अतिथि रहे तथा संस्थान के निदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। पुरस्कार वितरण के साथ सतर्कता सप्ताह का समापन हुआ।

निस्केयर
NISCAIR

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. मनोज कुमार पटैरिया, निदेशक, सीएसआईआर-निस्केयर द्वारा स्वामी राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान के लिए डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 से प्रकाशित एवं निस्केयर प्रैस, डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 से मुद्रित।

सम्पादकः डॉ. बालक राम; सम्पादन सहायकः मीनाक्षी गौड़; अनुवादः अनिरुद्ध तिवारी; कम्पोजिंगः कृष्णा; प्रोडक्शनः पंकज गुप्ता; डिजाइन एवं लेआउटः सरला दत्ता
फोनः 25841769, 25846304-7/371; फैक्सः 25847062; ई-मेलः csirsamachar@niscair.res.in; वेबसाइटः http://www.niscair.res.in
बिक्री एवं वितरण अधिकारी, निस्केयर; ईमेलः sales@niscair.res.in; फोनः 011-25843359
वार्षिक सदस्यताः ₹ 500/-; एक अंकः ₹ 50/-

DELHIN / 2013/52141